## पद ४४

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

शिव शिव शंभो शंकरा। दीनोद्धारणा अघहरणा।।ध्रु.।। हर हर देवा ईश्वरा। किर करुणा पुरदहना।।१।। भवभव विभव त्रिनेत्रा। व्यालभूषणा भवहनना।।२।। शिव शिव शर्वा प्रभो सुकरा। दावी चरणा विषभक्षणा।।३।। आता मनोहरा गुरुमाणिकाच्या दीना। पाही दिग्वसना।।४।।